शिव तो ठहरे सन्यासी गौरां पछताओगी

शिव तो ठहरे सन्यासी, गौरां पछताओगी ॥
भटकोगी वन वन में, घर नहीं पाओगी
शिव तो ठहरे सन्यासी,,,,,,,,,,,,,

गौरां तेरे दुल्हे का, घर न दुहरिया है ॥
ऊंचे ऊंचे पर्वत पे, कैसे रह पाओगी,
शिव तो ठहरे सन्यासी,,,,,,,,,,,,,

गौरां तेरे दुल्हे की, माँ ना बहनिया है ॥
भूत प्रेतालों संग, कैसे रह पाओगी,
शिव तो ठहरे सन्यासी,,,,,,,,,,,,,

गौरां तेरे दुल्हे के, गहने ना कपड़े हैं ॥
काले काले नागों को, देख डर जाओगी,
शिव तो ठहरे सन्यासी,,,,,,,,,,,,,

गौरां तेरे दुल्हे की, मोटर ना गाड़ी है ॥
बूढ़े बैल नंदी पे, कैसे चढ़ पाओगी,
शिव तो ठहरे सन्यासी,,,,,,,,,,,,,

जैसा पति मुझ को मिला, वैसा पति सब को मिले ॥
उसके दर्शन से, सब तर जाओगी,
शिव तो ठहरे सन्यासी,,,,,,,,,,,,,
अपलोडर- अनिल रामूर्ति भोपाल

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/11134/title/shiv-to-thehre-sanyaasi-gora-pachtaaogi

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |